लिपि के प्रकार

1. उत्तर भारतीय लिपि (Completed)
2. दक्षिण भारतीय लिपि(तेलुगु-कन्नड, ग्रन्थ, कलिंग और तमिल लिपि- Completed)
3. पूर्व भारतीय लिपि(Completed)
4. पश्चिम भारतीय लिपि(Completed)
5. वाकाटक लिपि

वाकाटक लिपि

ब्राह्मी लिपि की दक्षिण भारतीय शैली के वर्ण त्वरा(घसीट) द्वारा गति से लिखे जाने के कारण गोलाकार हो गए थे। साथ ही उनमें भंग भी आ गया था। इस लेखन पद्धति ने दक्षिण भारतीय लेखन को रूप दिया। इस पद्धति में चौकोर और शिरोरेखा का प्रभुत्व रहा है। यद्यपि त्रिकोणात्मक शिरोरेखा भी उपलब्ध हो जाती है। यह गोलाकार स्वरूप पांचवी शताब्दी ईस्वी में एक कोणीय आधार वाला भी प्राप्त होता है।

यही कोणीय आधार युक्त दक्षिण भारतीय शैली ही वाकाटक शैली कही जा सकती है। इस शैली में वाकाटक नरेशों के साथ-साथ परिव्राजक एवं उच्छकल्प-वंशी नरेशों के लेख ही दृष्टिगोचर होते हैं। पुना से प्राप्त प्रभावतीगुप्ता का इस लेख, इस पद्धति में उत्कीर्ण प्रमुख उदाहरण है। इसमें शिरोरेखा त्रिकोणात्मक है। इसी पद्धति में लिखा लिखा गया एक अन्य अभिलेख मझगाँव से प्राप्त हस्तिन् का है।

पूना से प्राप्त लेख में दक्षिण भारतीय शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है परंतु हस्तिन् मझगांव लेख में यह प्रभाव नहीं है। इसी क्रम में जयनाथ, सर्वनाम,संक्षोभ, भीमसेन ii के लेख भी महत्वपूर्ण उदाहराण हैं। इनमें उत्तर भारतीय शैली प्राप्त होती है परंतु समकालीन कुटिल लिपि का प्रयोग अथवा कुटिल लिपि की छाया उपलब्ध नहीं होती।

इस प्रसंग में औरों से वाकाटक अभिलेख(चौथी-पांचवी शताब्दी) अन्य उदाहरणों से भिन्न हैं। इनके जैसे प्रयोग सरभपुर नरेशों के छठी-सातवीं शताब्दी के लेखों में भी उपलब्ध होते हैं। वाकाटकों के साथ वर्णित लेखों की लेखन पद्धति को देखकर प्रतीत होता है कि इनके समय एवं क्षेत्र में लेखन का व्यवसाय करने वाले उत्कीर्णाकर्त्ताओं ने विभिन्न रूपों को टाइप जैसे स्टाइलस तैयार कर लिए होंगे। उनके प्रयोग में वर्णों का रूप तैयार किया जाता रहा होगा।

उपर्युक्त समस्त अभिलेखों में इस प्रकार के टाइप से अंकित लेख प्रतीत होते हैं। इनमें वर्णों की रेखाओं, कोणों इत्यादि का माप एक सा है। इसीलिए टाइप की कल्पना सच्ची प्रतीत होती है। इन टाइप की संख्या लगभग 14 रही होगी। इन भिन्न-भिन्न चिन्हों को परस्पर उत्कीर्ण करके वर्णों की रचना की जाती है। इस प्रकार के प्रयोग मल्लर, बोंडा, अधभर, खोह, करितलाई इत्यादि स्थानों से उपलब्ध ताम्रपत्र अभिलेखों में प्राप्त होते हैं।